Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR 2023, VOL- 10/76

उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन

प्रियंका तिवारी
शोधार्थी, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।

Paper Received On: 21 APRIL 2023

Peer Reviewed On: 30 APRIL 2023

Published On: 01 MAY 2023

Abstract

विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण में परिणाम, पुरस्कार व्यवस्था, अन्तःव्यक्ति सम्बन्ध, संगठनात्मक प्रक्रिया, कार्य की शुद्धता, सूचनाओं का आदान प्रदान एवम् परोपकारी व्यवहार को सम्मिलित किया जाता है। यदि प्रबंधन शिक्षकों को प्रेरित या संतुष्ट करता है तब शिक्षक अपने काम के प्रति, अपने व्यवसाय के प्रति संगठन के तरक्की के लिए अर्थात उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि पड़ता है। शोधार्थी ने उद्देश्य के रूप में 1.वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन। 2.वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन। 3.वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन। परिकल्पनाए के रूप में 1. वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। 2.वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। 3.वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सहसंबंध नहीं होता ***है।*** *न्याद र्श हेतु ग्वालियर शहर के 20 उच्च माध्यमिक विद्यालयों, 200 शिक्षकों एवं 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में भोधार्थी ने संगठनात्मक वातावरण के मापन हेतु सन्ज्योत पैथे, सुशमा चौधरी एवम् उपिंदर धर (2001) द्वारा निर्मित ऑर्गनाइज़ेशनल क्लाईमेट स्केल का चयन किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु ग्वालियर शहर में स्थित माध्यमिक शिक्षा मण्डल म. प्र. भोपाल द्वारा मान्य शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा के कुल प्राप्तांकों को मूल रूप से स्वीकार किया गया है। निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध धनात्मक परिलक्षित हो रहा है।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

संगठनात्मक वातावरण को सामाजिक सम्बन्धों के रूप में परिभाशित किया जा सकता है जिसके साथ संगठन में कार्य करने वाले व्यक्तियों में उत्पन्न भावनायें एवम् संवेग जुड़े रहते हैं। प्रत्येक विद्यालयी व्यवस्था में अध्यापक एवम् प्राचार्य के विभिन्न प्रकार के व्यवहार देखने को मिलते हैं तथा इसी आधार पर विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण का सृजन होता है। **शर्मा, कृष्णा (2017) ने** संगठनात्मक वातावरण का अध्यापकों की भूमिका दबाव के संदर्भ में अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका निर्धारित होती है, जन्म से लेकर मृत्यु तक हम उस भूमिका का निर्वहन करते हैं, उसी प्रकार विद्यालय में सभी अध्यापक गण अपनी अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। जब अध्यापक अपनी भूमिका का निर्वहन करने में असमर्थ होने लगते हैं वह उन्हें दबाव महसूस होने लगता है जिससे शिक्षक में शिक्षण कार्य के प्रति रूचि कम होने लगती है, कार्यकुशलता का हास होने लगता है, और सहयोग का

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वातावरण गड़बड़ा जाता है जो कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यालय संगठनात्मक वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है जिसका अधिकांशतः विद्यार्थियों की उपलब्धि, उनके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, समायोजन, रुचि साथ ही उनके संज्ञानात्मक एवं असंज्ञानात्मक कारकों पर नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं विद्यालय के समस्त कार्यों के संगठन तथा संचालन का उत्तरदायित्व विद्यालय के प्रधानाचार्य पर होता है किन्तु यह कार्य शिक्षक, विद्यार्थियों एवम् अन्य कर्मचारियों की सहायता के बिना सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न नहीं हो सकता। विद्यालयों के प्रधानाचार्य, शिक्षक, विद्यार्थियों एवम् अन्य कर्मचारियों के परस्पर मनोवैज्ञानिक वातावरण, सामाजिक अन्तःक्रिया, पारस्परिक सम्बन्ध, सामाजिक संवेगात्मक वातावरण आदि को सम्मिलित रूप से संगठनात्मक वातावरण के रूप में व्यक्त किया जाता है। विस्तृत रूप में विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण में परिणाम, पुरस्कार व्यवस्था, अन्तःव्यक्ति सम्बन्ध, संगठनात्मक प्रक्रिया, कार्य की भाुद्धता, सूचनाओं का आदान प्रदान एवम् परोपकारी व्यवहार को सम्मिलित किया जाता है यदि विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण की परिणाम व्यवस्था सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न की जाती है तो अध्यापकों को एक दूसरे की स्थिति का ज्ञान रहता है साथ ही साथ अध्यापकों को विद्यार्थियों की ौक्षिक स्थिति का भी ज्ञान रहता है और वह अपने स्थान को उच्च बनाने के लिए प्रयत्न ील हो जाते हैं। है। कार्य करते समय मनुष्य के जीवन में संगठन का विशेष प्रभाव पड़ता है संगठन के उद्देश्य किस प्रकार से पूर्ण होते हैं इस पर हमारा रहन–सहन, स्वास्थ्य, सुरक्षा, शैक्षिक योग्यता इत्यादि कारक प्रभावित करते हैं। विद्यार्थियों की संगठनात्मक वातावरण की बात करें तो विद्यालयों के मानदंड, मूल्य, अपेक्षाएं, नीतियां, कार्य प्रेरणा, प्रतिबद्धता, अंततः व्यक्तिगत एवं वातावरण आदि हैं। यदि प्रबंधन शिक्षकों को प्रेरित या संतुष्ट करता है तब शिक्षक अपने काम के प्रति, अपने व्यवसाय के प्रति संगठन के तरक्की के लिए अर्थात उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि पड़ता है। वर्तमान समय में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय संगठनात्मक वातावरण निम्न देखा जाता है जिसका कारण संभवतः अध्यापकों की कम संख्या,कार्यभार अधिक, तथा नौकरी ना जाने का भय आदि है। साथ ही इसी प्रकार का वातावरण उन निजी विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में देखा जाता है जहां पर कम योग्य शिक्षकों की नियुक्ति, कम वेतन एवं प्रबंधन का हस्तक्षेप ज्यादा हो। ऐसे विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण संतोषजनक ना होने के कारण शिक्षक प्रायः खिन्न रहते हैं जिससे वे विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक रवैया, खुशनुमा वातावरण निर्मित करने का उत्तरदायित्व नहीं निभाते जिसके कारण प्रायः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित होती है।

मिश्रा, (2019) ने अपने अध्ययन में सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों की संगठनात्मक वातावरण में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। है। जबकि टण्डन. एवम् गुप्ता. (2005) ने एक भोध अध्ययन सरकारी एवम् गैर–सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के भौक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन और भौक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन पर किया। व अध्ययन के परिणामों में यह पाया गया कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के भौक्षिक वातावरण का प्रभाव भौक्षिक उपलब्धि पर असार्थक रूप से पड़ता है। **गोयल.** (2007) ने वि लेशणोपरान्त निश्कर्श स्वरूप पाया गया कि सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा प्राइवेट विद्यालयों में सीखने का स्तर उच्च होता है जबकि सरकारी विद्यालयों में ि ाक्षकों की आय अधिक होती है। **जॉन डब्ल्यू न्यूज स्टोन और कीत डेविस (2015)** के अनुसार संगठनात्मक व्यवहार विज्ञान का अध्ययन और अनुप्रयोग करना है कि संगठन के अंतर्गत लोग किस प्रकार का व्यवहार करते हैं यह सब लोगों के संबंध में व्यापक अध्ययन और अनुप्रयोग है। **फ्रेड लूथांस (2011)** के अनुसार संगठनात्मक व्यवहार सीधे ही संगठन में मानव व्यवहार को बनाना और उसका नियंत्रण करना है। अतः उपर्युक्त विवेचन के फलस्वरूप भोधार्थी के मस्तिश्क में कुछ स्वाभाविक

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जिज्ञासायें एवम् प्र न चिन्ह उत्पन्न हुये जो प्रस्तुत भोध समस्या के चयन का कारण बने। वह जिज्ञासायें एवम् प्र न निम्न हैं –

1. **क्या वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में अंतर है?**
2. **क्या वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभाव पड़ता है ?**
3. **क्या उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध है ?**

उक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु एवं सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के पश्चात शोधार्थी ने **''उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन''** शीर्षक पर शोध अध्ययन करने का निश्चय किया है।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन

समस्या में प्रयुक्त भाब्दों की व्याख्या

उच्च माध्यमिक विद्यालय

शिक्षा संहिता (1963) के अनुसार "उच्च माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य ऐसे विद्यालय से है जिसमें निम्न कक्षाओं के साथ अथवा उनके बिना नवीं तथा दसवीं एवम् ग्यारहवीं तथा बारहवीं कक्षा हों तथा वह विद्यालयों के माध्यमिक शिक्षा परिशद् अथवा किसी विश्वविद्यालय की हाई स्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार करता है।"

कार्यात्मक परिभाशा प्रस्तुत भोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक विद्यालयों से आ ाय उन विद्यालयों से है जिसमें छठवीं कक्षा स्तर से 12 वीं कक्षा स्तर तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। साथ ही जो मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल से मान्यता प्राप्त हैं। वित्तीय आधार पर वर्गीकृत से तात्पर्य है कि विभिन्न प्रबंध तंत्र के रूप में संचालित किया जाता है, जिन्हें भोधार्थी ने शासकीय या अशासकीय रूप में निरूपित किया है। इन प्रबंध तंत्र द्वारा संचालित विद्यालयों में आय अर्थात धन के स्रोत अलग–अलग होते है।

विद्यार्थी

केम्ब्रिज डिक्शनरी के अनुसार विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में जो व्यक्ति अध्ययन कर रहा है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों से तात्पर्य ग्वालियर शहर के अंतर्गत आने वाले शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 वीं में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं से है।

विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण

टॉगिउरी (1966) के अनुसार "व्यवस्थात्मक पर्यावरण सापेक्षतः संगठन के आन्तरिक पर्यावरण को स्थायित्व देने वाली वि ोशता है जिसे उसमें कार्य करने वाले लोग अनुभव करते हैं तथा जो उनके व्यवहार को बदलती है एवम् मूल्यों के दृश्टिकोण से किसी संगठन की खास प्रकार की वि ोशताओं को परिलक्षित करती है।"

कार्यात्मक परिभाशा प्रस्तावित भोध अध्ययन में विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण से आ ाय उस वातावरण से है जिसमें प्रधानाचार्य, अध्यापक, विद्यार्थी तथा अन्य विद्यालयी कर्मचारी व्यक्तिगत एवम् सामूहिक रूप से अपने भौक्षिक क्रियाकलाप आयोजित करते हैं। विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण में विद्यालय में सम्पन्न होने वाली परिणाम व पुरस्कार व्यवस्था, अन्तःव्यक्ति सम्बन्ध, संगठनात्मक प्रक्रिया, कार्य की भाुद्धता, सूचनाओं का आदान प्रदान एवम् परोपकारी व्यवहार को सम्मिलित किया गया है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भौक्षिक उपलब्धि

सामान्यतया, भौक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य उस अभिकल्प से है जो विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम अथवा वि ाश्ट विशय/विशयों से सम्बन्धित संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा कौ ालात्मक पक्षों को प्रतिबिम्बित करता है।

गुड (1987) के अनुसार "विद्यालयी विशयों द्वारा प्राप्त ज्ञान अथवा विकसित कौ ाल का परीक्षण तथा उसमें प्राप्तांक ही भौक्षिक उपलब्धि है।"

कार्यात्मक परिभाशा प्रस्तुत अध्ययन में, भौक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य माध्यमिक ि ाक्षा परिशद्, मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल द्वारा संचालित हाईस्कूल परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा विविध विशयों में प्राप्त अंकों के कुल योग के प्रति ात प्राप्तांक से है।

उद्देश्य

1 वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।
2 वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।
3 वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन।

परिकल्पनाएं

1. वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सहसंबंध नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत भोाध अध्ययन में ग्वालियर शहर के मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल से मान्यता प्राप्त शासकीय एवम् अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया ।
2. प्रस्तुत भोाध कार्य में शासकीय एवम् अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 से 12 वीं तक अध्यापन कार्य करने वाले 200 ि ाक्षकों व कक्षा ग्यारहवीं के 400 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया।

शोधकार्य के दौरान प्रस्तावित कार्यविधि

अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

परतंत्र चर संगठनात्मक वातावरण, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

न्यादर्श

प्रस्तुत भोाध के सन्दर्भ में प्रतिद ाि चयन के निमित्त सुविधाजनक यादृच्छिक एवं बहुस्तरीय प्रतिद ाि चयन के द्वारा ग्वालियर शहर के 20 उच्च माध्यमिक विद्यालयों, 200 ि ाक्षकों एवं 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपकरण

संगठनात्मक वातावरण उपकरण का चयन

अध्ययन के सन्दर्भ में भोधार्थी ने सन्ज्योत पैथे, सुशमा चौधरी एवम् उपिंदर धर (2001) द्वारा निर्मित ऑर्गनाइज़े ानल क्लाईमेट स्केल का चयन किया गया।

शैक्षिक उपलब्धि उपकरण का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु ग्वालियर शहर में स्थित माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल द्वारा मान्य शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा के कुल प्राप्तांकों को मूल रूप से स्वीकार किया गया है। यह परीक्षा माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल द्वारा संचालित की जाती है। तथा प्राप्त परीक्षाफल को प्रत्येक मान्यता प्राप्त विद्यालय, महाविद्यालय, राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकृत किया जाता है।

सांख्यिकी प्रविधियां

प्रस्तुत भोध अध्ययन में प्रदत्तों के सारणीयन एवं निश्कर्श प्राप्त करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात, का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेशण एवं व्याख्या

1. **वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।**

तालिका सं 1 वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात।

क्र॰सं॰	विद्यालयों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	शासकीय	100	82.08	15.31	191	9.7	< 0.01
2	अशासकीय	100	107.07	18.44			

तालिका सं॰ 1 के अवलोकन से स्पश्ट होता है कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदि ात हो रहा है। **फ्रॉथिगम (1989) तथा गनिहर एवम् भााइख (1999)** ने स्वयं के भोध अध्ययनों में पाया कि सरकारी एवम् निजी विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में सार्थक अन्तर होता है।

2. **वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन**

तालिका सं॰ 2 वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात।

क्र॰सं॰	विद्यालयों के प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	शासकीय	200	47.52	6.72	399	11.37	< 0.01
2	अशासकीय	200	68.33	8.30			

तालिका सं॰ 2 के अवलोकन से विदित होता है कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है **(पेडा (2013), बज (2007) तथा विल (2015)** ने भी

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अपने भाोध अध्ययनों में पाया कि सरकारी एवम् निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है)। **त्रिपाठी, विवेक नाथ एवं दुर्गेश कुमार.(2016)** के शोध विश्लेषण के बाद यह पता लगा कि चित्रकूट जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। चित्रकूट जिले के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में बेहतर है।

3 वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

तालिका सं॰ 3 वित्तीय आधार पर वर्गीकृत उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

	संगठनात्मक वातावरण	सहसंबंध गुणांक	सहसंबंध गुणांक
1	शासकीय	=0.67	0.01
2	अशासकीय		

तालिका सं॰ 3 के अवलोकन से विदित होता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सकारात्मक सम्बन्ध गया। डेमनिक, (2005) ने स्वयं के भाोध अध्ययनों में पाया कि उच्च माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध देखा गया।

निष्कर्ष

विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध धनात्मक परिलक्षित हो रहा है। विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण को शिक्षकों का अच्छा वेतन, पदोन्नति, पुरस्कार, सौहर्दपूर्ण वातावरण, नौकरी स्थायित्व, विद्यालयों के सभी कर्मचारियों (प्रधानाचार्य, प्रबंधन समिति, शिक्षक, विद्यार्थी, चपरासी) में आपसी संबंध आदि प्रभावित करते हैं। स्पष्ट होता है कि शिक्षक गण प्रसन्न होकर, अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्ट होकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उचित प्रकार से संपन्न करते हैं, जिससे विद्यार्थियों की उपलब्धि उच्च दृष्टिगोचर होती है। इसलिए उक्त तत्वों का विशेष ध्यान रखना चाहिए व इस संबंध में उपाय भी किए जाने चाहिए, जिससे शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठा भाव, इमानदारी, प्रेरित महसूस करें।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

भदौरिया, सुनीता. (2013). उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, शोध समीक्षा और मूल्यांकन, जनवरी 2013, पृ. 93

बंगा, चमन लाल.(2014). शिक्षक, शिक्षक व्यवहार एवं शिक्षण एक व्यवसाय. इंटरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी ई जनरल. वॉल्यूम 3., अंक 4. पृ. 126–139

बी.पी. प्रवीण. (2004). प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करने का अध्ययन (जनार्दन राय नगर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय डबोक उदयपुर राजस्थान) प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल 2004 पृ. 25

सिंह, जय प्रकाश. (2013). *रिलेशनशिप बिट्वीन टीचिंग कॉम्पीटेंस एण्ड सेटिस्फेक्शनः ए स्टडी एमांग टीचर एजुकेटर्स वर्किंग इन सेल्फ फाइनेसिंग कालेज* इन उत्तर प्रदेश इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च 35 2013

डिना, कोडी. (2006). *टीचिंग इफेक्टिवनेस एण्ड स्टुडेन्ट शेरमैन हिलेन अचीवमेंट इक्जामिंग द रिलेशनशिप* एजुकेशनल रिसर्च क्वार्टर्ली 29,पृ. 40–51।

गुप्ता,एस.पी. एवं अल्का गुप्ता.(2004). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।

गुप्ता, रचना एवं डा.शालिनी. (2021). *गृह वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन* कला सरोवर वॉल्यूम 24 अंक 1 जनवरी–मार्च 2021 पृ. 512–520

गुप्ता, संगीता एवं मोहन्ती, ए.के. (2009). *भावी शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय, कक्षा–कक्ष शिक्षण तथा छात्र केन्द्रित अभ्यास के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन*, जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन एण्ड रिसर्च. नई दिल्ली. वर्ष 4, अंक 2, पृ. 67–70.

हेकर्ट, टेरिसा एण्ड अदर. (2006). *रिलेशन ऑफ कोर्स इंस्ट्रक्टर्स एण्ड स्टूडेंट करेक्ट्रिस्टिक्स टू डाइमेंशन ऑफ स्टूडेन्ट रेटिंग ऑफ टीचिंग इफेक्टिवनेस*, 2006 कोलज स्टूडेन्ट जर्नल, 40, पृ. 195–203।

जोशी अनुराधा एवं सिंह. (2004). *फ्लैण्डर्स की अन्तः किया विश्लेषण प्रणाली का शिक्षण दक्षता पर प्रभावः एक प्रयोग* (एस.एस. श्रीवास्तव) सम्पादक भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका लखनऊ इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन 23 (2).

कुमार ज्योतिन्द. (2013). *एकेडमिक सैटिस्फैक्शन एण्ड मैन्टल हैल्थ स्टेट्स ऑफ टीचर ट्रेनीज* शोध समीक्षा ओर मूल्यांकन, फरवरी 2013 पृ. 22

मित्तल, संतोष. (1995). शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा कक्ष प्रबन्ध राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

नायक, रमेश. (2006). *विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्यापकों के व्यक्तित्व अभिवृत्ति और शिक्षण प्रभावशीलता का प्रभाव*, एक्सपेरीमेन्ट इन एजूकेशन, वॉल्यूम 34 अप्रेल पृ. 72

नायक, रमेश.(2006). *विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्यापकों के व्यक्तित्व अभिवृत्ति और शिक्षण प्रभावशीलता का प्रभाव.* एक्सपेरीमेंट्स एजुकेशन, अप्रैल 2006. वॉल्यूम 34 72

पाण्डेय, एन. (1986). एफेक्ट्स ऑफ स्कूलिंग ऑन द डेवलपमेन्ट ऑफ लॉजिकल थिकिंग एण्ड ऐडजस्टमेन्ट अमंग इलीमेंटरी स्कूल चिल्ड्रेन, पी.एच.डी. एजुकेशन, उत्कल यूनीवर्सिटी।

राबर्ट एवं फ्रांसिस.(2002). इन्साइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन रिसर्च, ए प्रोजेक्ट ऑफ द अमेरिकन एजूकेशन रिसर्च एसोसिएशन, फर्स्ट एडिशन, पृ. 645

शर्मा, आभा एवं वेदी कान्ता.(2016) .*ए स्टडी ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स एप्टीडयूट अबाउट टीचिंग प्रोफेशन इन्टरनेशनल* जनरल ऑफ एज्यूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनन्स्ट्रेशन आई एस.एस. एम 2249–3093 वाल्यूम 6, अंक 1 (2016) पी.पी. 16

शर्मा, अर्चना एवं चन्देल,एन.पी.एस.(2010). प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की कक्षा कक्ष अशाब्दिक सम्प्रेषण व्यवहार जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड डिजर्टेशन एब्सट्रे जनवरी 2011 चतुर्थ अंक डी.ई. आई. आगरा पृ. 113

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शर्मा, संजय. (2006). शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं यौनभेद के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन, एम.एड अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध डी.ई.आई. आगरा ।

शर्मा, कृष्णा. (2017). *संगठनात्मक वातावरण का अध्यापकों की भूमिका दबाव के संदर्भ में अध्ययन,* इंटरनेशनल जनरल ऑफ अप्लाइड रिसर्च. वॉल्यूम 3 अंक 8 भाग 1 (2017).

शर्मा, योगेश्वर प्रसाद एवं उनके साथियों.(2021). *माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का सामाजिक विषय में निष्पत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन –अमरोहा जनपद की विशेष संदर्भ में* नेशनल जनरल ऑफ मल्टीडिसीप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट वॉल्यूम 6 अंक 2 वर्ष 2021.16–18.

यू.टी.वाई रॉबर्ट.(2005). *रिलेशनशिप बिटवीन टीचर्स टीचिंग इफेक्टिवनेस एण्ड स्कूल इफेक्टिवनेस इन कॉम्प्रेहेन्सीव हाई स्कूल इन ताइवान रिपब्लिक ऑफ चाइना,* 2005) इ.आर.आई.सी. आन लाईन सब्सिशन पेपर प्रजेन्टेड एट द इंटरनेशनल कांग्रेस।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies